Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

महाभारत काल प्राचीन भारतीय इतिहासः लाखामडंल - विकसित भारत में योगदान

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrhs.net.v13.i8.8

रूपाली वशिष्ठ
शोधार्थी
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
उत्तराखंड, भारत
डॉ. लक्ष्मी दीक्षित
शोध निर्देशक
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
उत्तराखंड, भारत

1. प्रस्तावना

इतिहास लेखन या तो "इतिहास" (एक अनुशासन के रूप में) की कार्यप्रणाली और विकारा के अध्ययन को संदर्भित करता है, या किसी विशेष विषय पर ऐतिहासिक कार्य के एक समूह को संदर्भित करता है। प्राचीन काल में दक्षिण एशियाई इतिहारा या इतिहारालेखन के उद्देश्य, साधन, पद्धति, उपकरण और प्रक्रिया की खोज करना इस पत्र का उद्देश्य है। दक्षिण एशिया के प्राचीन इतिहास-लेखन के स्रोत अधिकतर धार्मिक साहित्य हैं। यद्यपि गैर-धार्मिक साहित्य भी मिलता है, फिर भी टिकटों और सिक्कों, पुरातात्विक अवशेषों, विदेशी यात्रियों और इतिहासकारों को प्राचीन दक्षिण एशिया के इतिहास लेखन का स्रोत गाना जा सकता है। हालाँकि गैर धार्मिक ऐतिहासिक रिकॉर्ड के रूप में योग्य होने के लिए अच्छी गुणवत्ता का नहीं है। इसलिए हम दक्षिण एशिया के प्राचीन इतिहास-लेखन को समझने के लिए ज्यादातर धार्मिक पुस्तकों पर निर्भर है। इन धार्मिक साहित्यों के अध्ययन से पता चलता है कि दक्षिण एशिया का प्राचीन इतिहास-लेखन ज्यादातर महाभारत और रामायण में वर्णित युन्द्रों की कहानी कह रहा था। हालांकि महाभारत में कुरुक्षेत्र युद्ध और कौरवों और पांडवों के राजकुमारों के भाग्य की अपनी महाकाव्य कथा के अलावा, महाभारत में बहुत अधिक दार्शनिक और भक्ति सामग्री शामिल है, जैसे कि चार "जीवन के लक्ष्य" या नई पीढ़ी के पुरुषार्थों की चर्चा भारतीय भी, हिन्दू भी और मुसलमान भी। इस पत्र में यह वर्णन करने का प्रयास किया गया है कि महाभारत प्राचीन दक्षिण एशियाई इतिहासलेखन का एक स्रोत है।

एशिया एक ऐसा देश है जहां ईश्वर के लगभग सभी दूत गार्गदर्शन के लिए पहुंचे। हालांकि वह क्षेत्र अरब क्षेत्र का हिस्सा है और अब इसे सऊदी अरब और इज़राइल कहा जाता है और मध्य पूर्व में स्थित है। यह दर्शाता है कि एशिया दुनिया भर में ज्ञान और ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए भगवान द्वारा बुना गया एक क्षेत्र है, जहां उस समय अरब अंधेरे युग में रह रहे थे। दक्षिण एशिया के बड़े हिस्से पर पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश जैरो देशों का प्रभुत्व है, जिरो एक

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

पूरे के रूप में उपगहाद्वीप कहा जाता था। दक्षिण एशिया, हालांकि भगवान के दूतों से धन्य नहीं है, लेकिन पूरा क्षेत्र सूफी संतों जैसे मुजादिद अलिफ सानी, शाह वली उल्लाह,

ख्वाजा गुइनुद्दीन चिश्ती, बू अली कलंदर और कई अन्य लोगों की शिक्षाओं रो आलोकित है।

यह क्षेत्र बुद्ध, गुरु नानक आदि महानपुरुषों की शिक्षाओं से भी आलोकित है। नेपाल, भूटान, श्रीलंका जैरो दक्षिण एशियाई देश अभी भी बौद्धों रो भरे हुए हैं। यहां तक कि अफगानिस्तान में भी एक रागय बौद्ध संस्कृति थी जैसा कि अफगानिस्तान में कई स्थानों पर मिली पुरानी बौद्ध सभ्यता के अवशेषों और बुद्ध की मूर्तियों के माध्यम से दिखाया गया है। भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्र का मुख्य देश है जिसमें हिंदुओं का वर्चस्व है।

प्राचीन काल में दक्षिण एशिया में कोई केन्द्रीय सरकार नहीं थी। पूरे क्षेत्र को छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित किया गया था, जिन पर विभिन्न राजकुमारों विशेषकर भारतीय उपमहाद्वीप का शासन था। दो राज्यों के बीच हमेशा युद्ध होता था क्योंकि एक राज्य दूसरे पर हावी होने की कोशिश करता था। ऐसे सैकड़ों राज्य थे। प्रत्येक पर एक अलग राजा / राजकुमार का शासन था। किसी राज्य के प्रशासन के लिए कोई निर्धारित नियम और कानून नहीं थे। मुखिया राज्यों का एकमात्र स्वामी होता है और नियम बनाने या नियम में संशोधन करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। अधिकांश राज्य तानाशाहों द्वारा चलाए जा रहे थे। उप-महाद्वीप या दक्षिण एशिया के इतिहास का वर्णन करने के लिए कोई प्रामाणिक रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है क्योंकि इतिहासलेखन शब्द का प्रयोग अधिक बुनियादी अर्थों में किया जाता है, जिसका अर्थ है "इतिहास का लेखन। फुरे और सालेवोरिस ने इतिहास-लेखन को परिभाषित करते हुए कहा है, "इतिहारा जिस तरह से लिखा गया है और लिखा गया है, उसका अध्ययन ऐतिहासिक लेखन का इतिहास है। जब आप इतिहासलेखन का अध्ययन करते हैं तो आप सीधे तौर पर अतीत की घटनाओं का अध्ययन नहीं करते हैं, बल्कि अलग अलग इतिहासकारों के कार्यों में उन घटनाओं की बदलती व्याख्याओं का अध्ययन करते हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से उपमहाद्वीप में किसी ने भी इतिहास और ऐतिहासिक घटनाओं और उनकी व्याख्या को समेकित करने का प्रयास नहीं किया। इसके अलावा

उप-गहाद्वीप को राजाओं द्वारा शासित छोटे राज्यों में विभाजित किया गया था, अदालत (दरबारी) इतिहासकार ने राजाओं के संबंध में प्रशंसा के कुछ पैराग्राफ लिखे जो आमतौर पर झूठे या पक्षपाती हैं। ऐतिहासिक रिकॉर्ड का बड़ा हिस्सा या तो मौसम के प्रभाव से नष्ट हो गया या किसी प्राकृतिक आपदा से नष्ट हो गया। हालांकि कुछ रिकॉर्ड उपलब्ध हैं जो ज्यादातर धार्मिक साहित्य से युक्त हैं। यहां यह उल्लेख करना गहत्वपूर्ण है कि लगभग सभी राभ्यताओं का ऐतिहासिक रिकॉर्ड अक्षुण्ण है जैसे कि ग्रीक, फारसी, अरब आदि। लेकिन दुर्भाग्य से प्राचीन दक्षिण एशिया में केवल कुछ ही ऐतिहासिक सामग्री और धार्मिक साहित्य हैं जो इस क्षेत्र के प्रावीन इतिहास को वित्रित करते हैं। यहाँ यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि लगभग सभी धर्मों में धार्मिक पुस्तकें हैं। ये किताबें बाइबिल, तोराह, ज़बूर और कुरान मजीद जैसे देशों की पिछली घटनाओं या इतिहास का वर्णन करती हैं। लेकिन साथ ही इन किताबों के अनुयायियों ने अलग अलग किताबें लिखीं जिनरो उनके समय का इतिहास पता चला जो उनके बारे में समझाने

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

का एक अच्छा स्रोत है। लेकिन उप-महाद्वीप में इस क्षेत्र के इतिहासकार द्वारा ऋग्वेद, भरमण ग्रंथ या उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसी धार्मिक पुस्तकों के अलावा ऐसी कोई प्रागाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। अतीत में भारतीय लोगों के जीवन का अध्ययन करने के लिए हमें भारतीय इतिहास के विभिन्न स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है। हालांकि किसी भी ऐतिहासिक कालक्रम का अभाव है, इसका मतलब यह नहीं है कि भारतीयों में ऐतिहासिक अर्थों की कमी है। साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त जानकारी और पुरातात्विक साक्ष्यों की पुष्टि हमें अपने प्राचीन काल की एक पूरी तरवीर बनाने में गदद करती है। प्राचीन भारतीय इतिहारा के पुनर्निर्माण के ग्रोत्तों का अध्ययन तीन व्यापक शीर्षकों के तहत किया जा सकता है, अर्थात् (1) साहित्यिक स्रोत (2) पुरातत्व स्रोत और (3) विदेशी इतिहासकारों और यात्रियों के वृतांत।

लाखामंडल शिव मंदिर

शिव पौराणिक काल से ही नेपाल से लेकर भारत में सुदूर केरल तक राम्पूर्ण भारत के आराध्य देव माने जाते रहे हैं। प्राचीन काल से ही वे इतनी अगाध आस्था, श्रद्धा

के प्रतीक रहे हैं कि उन्हें देवों के देव, गहादेव के नाग रो भी पुकारा गया। यही कारण है कि उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक कहीं न कहीं मंदिरों में शिव तथा नन्दी की प्रतिमाएं गव्य रूप में नजर आती हैं। ऐलीफैन्टाकेव में प्राचीन स्थापित शिवलिंग हो या शिव की प्रतिमा उत्तराखण्ड में केदारधाम, मदमहेश्वर, तुंगनाथ, लाखामण्डल, या मध्य प्रदेश में खजुराहो के मन्दिरों के शिवलिंग हों, हिगाचल प्रदेश में चागुण्डा देवी के मंदिर में स्थापित शिवलिंग, नन्दी की प्रतिगा हो, या बैजनाथ के भव्य गन्दिर में स्थापित शिवलिंग हो या नन्दी की प्रतिगा हो, या गुजरात में सोमनाथ में स्थापित शिवलिंग हो, शिव अपनी गव्यता तथा पौराणिक कथाओं के साथ पूरे भारत में नजर आते हैं।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय इतिहारा के अधिकांश साहित्यिक स्रोत गुख्य रूप से धार्मिक थे और कम तथ्यात्मक डेटा होते हैं जिन्हें प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत माना जा सकता है। कुछ सबसे पुराने स्रोतों में पुराण, वेद और महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत शामिल हैं। ये स्रोत राजनीतिक परिदृश्य के बजाय उस युग की सभ्यता और संस्कृति पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद, आर्यों, भारत में उनके स्थानांतरण और अन्य कुलों के साथ उनकी बातचीत के बारे में जानकारी प्रदान करता है। वेद आम तौर पर आर्य सभ्यता के बारे में विस्तृत तथ्य प्रस्तुत करते हैं। पुराण, जो गुप्त काल के दौरान तैयार किए गए थे, में शाही वंश और उनके शासनकाल के बारे में ऐतिहासिक तथ्य शामिल हैं। जबकि उपनिषद वैदिक काल के धार्मिक भाग की सूचना देते हैं। इसके अलावा, विभिन्न जैन और बौद्ध साहित्य और धार्मिक ग्रंथों में संदर्भ के लिए ऐतिहासिक सामग्री शामिल है। बौद्ध साहित्य, जो पाली में लिखा गया था, उसमें भगवान बुद्ध और उस युग के विभिन्न राजाओं के बारे मई जानकारी थी प्राकृत मई लिखे गए जैन ग्रंथों ने भारत में व्यापार और व्यापारियों के बारे में तथ्य प्रदान किए। बौद्ध द्विपतंश, महावंश और जैन पेरिसिस्ताप्रवण कुछ ग्रंथ हैं जो कुछ ऐतिहासिक संसाधनों की आपूर्ति करते हैं। मनु स्मृति, विष्णु स्मृति, नारद स्मृति में भूमि के कानून और राजाओं और अन्य नौकरशाहों के कर्तव्यों से संबंधित नियमों के संदर्भ शामिल हैं। अर्थशास्त्र, कौटिल्य द्वारा लिखित एक कानून पुस्तक, गौर्य

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

साम्राज्य के दौरान रागाज में गौजूद आर्थिक और कानूनी गुद्दों के बारे में बताती है। पाणिनी और पतंजलि के व्याकरण, गार्गी संहिता में पर्याप्त ऐतिहासिक स्रोत भी शामिल हैं।

गहाभारत ऋषि व्यारा द्वारा लिखित और रचित है। हालाँकि यह गाना जाता है कि इरा लंबे गहाकाव्य के लेखक कोई अज्ञात व्यक्ति है लेकिन व्यारा ने इरो संकलित किया। गहाभारत (आंशिक रूप रो धार्मिक और आंशिक रूप से धर्मनिरपेक्ष) छठी शताब्दी ईसा पूर्व से पहले हिंदू समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश की बाढ़ फेंकता है। महाभारत मूलतः एक महाकाव्य है। यह हेरोडोटस के फारसी युद्ध की तरह युद्ध की कहानी है। यह विश्व साहित्य में सबसे लंबे महाकाव्य (100,000 या 88.000 2 पंक्ति छंद) के रूप में गान्यता प्राप्त है, जो इरो होगर के इलियड और ओडिसी से आठ गुना और बाइबिल से 3 गुना लंबा बनाता है। इस महाकाव्य का मुख्य विषय पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध है। हालाँकि, मिथक और शिक्षाएँ मुख्य विषय पर हावी थीं। महाभारत को भारत के प्राचीन इतिहासलेखन के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि इसने नदी देवी, गंगा जैसे विभिन्न देवताओं की कहानी का खुलासा किया और प्राचीन उपमहाद्वीप के अधिकांश हिंदू थे जो विभिन्न देवताओं में विश्वास करते थे इसलिए इसने प्राचीन लोगों की धार्मिक मान्यताओं को प्रकट किया। भारत। विभिन्न उपकथाओं के साथ-साथ अनेक कहानियाँ हैं। महाभारत ने उस समय की मान्यताओं, धर्म, नैतिक मूल्यों, आदतों और रीति-रिवाजों, संस्कृति, राजनीतिक संगठन को प्रकट किया। प्राचीन समय के लोग जादू को एक ऐसी शक्ति के रूप में मानते थे जो उनके जीवन पर हावी थी। उस समय लगभग पूरी आबादी हिंदू थी। प्राचीन काल के लोग नैतिक मूल्यों का बहुत सम्मान करते थे और वे अच्छे और बुरे के बीच का अंतर जानते थे। उन्होंने अपने पूर्वजों की परंपराओं, रीति रिवाजों और आदतों का पालन किया और मूल रूप से प्राबीन भारत एक पारंपरिक समाज था। राजनीतिक रूप से इस क्षेत्र पर छोटी रियासतों का शासन था जैसा कि महाभारत में दिखाया गया है और ये राज्य आगतौर पर एक-दूसरे से लड़ते थे और एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी थे। भारत की एक प्राचीन गहिला कई पुरुषों से शादी कर सकती है। जादू-टोना बहुत आम था और उनकी संस्कृति का हिस्सा बन गया।

सामाजिक रूप से रागाज में बदले की भावना का बोलबाला था और लोग बदला पूरा करने के लिए लंबे समय तक इंतजार करते थे। व्रतों का महत्व और शक्ति पूरे महाकाव्य में स्पष्ट है। जैसा कि महाकाव्य में कहा गया है, ब्राहाणों का समाज पर प्रभुत्व था।

एक बार कहे जाने के बाद, एक प्रतिज्ञा रात्य बन जाती है और उरो पूरी करनी चाहिए, चाहे कुछ भी हो जाए। महाकाव्य ने आगे खुलासा किया कि समाज में अमीर लोगों का वर्चस्व था और अमीर लोगों द्वारा गरीबों से नफरत की जाती थी। जैसा कि महाकाव्य में दिखाया गया है, 'युवा राजकुमारी को बच्चे दिए जाने चाहिए, लेकिन उन्हें कौन पिता बना राकता है? भीष्षण के अलावा परिवार में कोई अन्य पुरुष नहीं था, और उन्होंने महिलाओं का त्याग कर दिया था। इसलिए राजा की दूसरी पत्नी सत्यवती अपने पहले जन्मे पुत्र कवि व्यास से दोनों राजकुमारियों को संतान देने के लिए कहती है। वह उनके पास जाता है, लेकिन राजकुमारियाँ उसे नापसंद करती

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

हैं, क्योंकि एक तपस्वी के रूप में जिसने गरीबी का व्रत लिया था, वह गंदी और बदबूदार थी "।

महाभारत में वर्णित है कि जादू को एक शक्ति माना जाता है और लोगों ने देवताओं को याद करने के लिए मंत्रों का पाठ किया। हस्तिनापुर के राजा पांडु को पता चला कि उनके बच्चे नहीं हो सकते। उसने राजगद्दी से इस्तीफा दे दिया और अपनी दोनों पत्नियों के साथ जंगल में बला गया। उनकी पहली पत्नी कुंती ने उन्हें बताया की उनके पास एक जादुई सूत्र है वह इच्छा से एक भगवान का आह्वान कर सकती थी और उसके द्वारा एक बच्चा पैदा कर सकती थी। मंत्र की शक्ति का परीक्षण किया गया और उसके तीन पुत्र पैदा हुए, देव धर्म के पुत्र युधिष्ठिर, भगवान वायु के पुत्र भीम, जो वायु के देवता थे और अर्जुन पुत्र देव इंद्र। माद्री ने भी इस जादू मंत्र का प्रयोग किया और जुड़वां पुत्रों, नकुल और सहदेव को जन्म दिया।

लाखामंडल स्थान यमुनोत्री मार्ग पर पड़ता है और यह स्थान देहरादून जिले की चकराता तहसील के अंतर्गत आता है। लाखागंडल से यमुनोत्री की दूरी गात्र 75 किलोमीटर है। रागुद्र तल से 1372 गीटर की ऊंचाई पर स्थित लाखागंडल, जौनसार-बावर क्षेत्र में पड़ता है। लाखामंडल, ठीक यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है। यह स्थान महादेव शिव के अनोखे मंदिर के लिए जाना जाता है और यहां जगह-जगह पर शिवलिंग और मूर्तियां देखने को मिल जाती हैं। समय-समय पर यहां भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ASOI) द्वारा खुदाई में हज़ारों अवशेष (शिवलिंग और अनोखी दुर्लभ मूर्तियां) मिली हैं। यहां की ऐतिहासिकता और पौराणिकता का स्थानीय लोगों के बीच बहुत महत्व है। यहाँ के इतिहास से प्रभावित होकर हजारों की संख्या में पर्यटक हर साल यहाँ पहुँचते हैं।

उत्तराखण्ड के सतोपथ शिखर जहां से युधिष्ठिर ने स्वर्ग गमन किया था वहां से लेकर सम्पूर्ण उत्तराखण्ड का महाभारत काल से गहरा सम्बन्ध रहा है। उत्तराखण्ड में जौनसार का लाखागण्डल क्षेत्र पाण्डवों के अज्ञातवारा का साक्षी रहा है। डाकपत्थर से 80 किलोमीटर दूर उत्तरकाशी मार्ग पर यमुना नदी को पारकर चार किलोमीटर दूर ऊपर लाखामण्डल गांव में पहुंचा जाता है। यहीं पर दुर्योधन ने पाण्डवों को जलाने के लिए लाक्ष्यागृह का निर्माण कराया था। इसी कारण आदि केदार क्षेत्र का यह गांव लाखामण्डल नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस क्षेत्र में उत्खनन के दौरान महाभारत काल की अनेक वस्तुएं पुरातत्ववेताओं को प्राप्त हुई। प्राचीन लाक्ष्यागृह के स्थान पर बने प्रावीन मन्दिर के स्थान पर बना है वर्तमान

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

मन्दिर जो शिव को समर्पित है। मन्दिर के समीप ही दो विशाल शिवलिंग हैं। जिनमें से एक विशाल ऊंचे चैकोर चबूतरे के ठीक मध्य में स्थापित है तो दूसरा थोडी दूर मन्दिर में स्थापित है। इस शिवलिंग पर जब पानी चढाया जाता है तो शिवलिंग में बहते पानी पर अपना प्रतिबिम्ब आसानी से देखा जा सकता है। इनमें से एक शिवलिंग को केदार शिवलिंग तथा दूसरे को युधिष्ठिर शिवलिंग कहा जाता है।

पैराणिक कथा है कि गहाराजा पाण्डु के गुप्तवाश के रागय लाखागण्डल में विचरण करते रागय चलाये गये तीर से एक हिरण की मृत्यु हो गयी थी। हिरण के श्राप के कारण कुछ दिन बाद ही महाराजा पाण्डू मृत्यु को प्राप्त हो गये थे। उस स्थान पर पाण्डव पुत्रों तथा विदुर ने शिव मन्दिर का निर्माण कराया था। तब लाखामण्डल क्षेत्र हस्तिनापुर राज्य के अधीन था। उस समय नाग जाति का प्रभुत्व सारे उत्तराखण्ड पर था। इस जाति का प्रभाव तत्कालीन मन्दिरों के शिल्प पर पड़ा। जिरासे नाग शिखर शैली के गन्दिर केवल उत्तराखण्ड में ही नहीं सम्पूर्ण पर्वतीय क्षेत्रों में दिखाई पड़ते हैं। कहते हैं कि लाखामण्डल का शिव मन्दिर, छठी सातवी शताब्दी के आसपास बना था। मन्दिर के पीछे दो विशाल खूबसूरत आदमकद प्रतिमाएं हैं जिन्हें जय विजय की प्रतिमाएं कहा जाता है। मन्दिर के प्रांगण में महाभारत कालीन संस्कृति और परम्पराओं के दर्शन आज भी होते हैं। यद्यपि समय के साथ व्यापक परिवर्तन हो रहा है, पर सुबह शाम प्राचीन वाद्य यन्त्रों, रणसिंघा, ढोल के साथ आज भी मन्दिर में पूजा अर्चना होती है।

गान्यता है कि गुख्य गन्दिर, प्राचीन गन्दिर के स्थान पर बना है। जो राजा चन्द्रगुप्त की पत्नी ऐश्वर्या ने, विवाह के दिन ही अपने पति की दुर्घटना में आकस्मिक मत्यु पर उनकी आत्मा की शुद्धि के लिए तथा उनकी स्मृति में बनवाया था ठीक उस स्थान पर जहां दुर्योधन ने लाक्ष्याग्रह बनवाया था। उत्खनन के दौरान समय समय पर प्राप्पा अभिलेखों, शिलालेखों से पुरातत्वेताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह गन्दर आठवीं शताब्दी में बना है। प्राप्त अभिलेखों के अनुसार यहां यादव वंश की राजकुमारी ईश्वरा ने इरा क्षेत्र पर कई वर्षों तक राज्य किया था। उसने अपने पति की स्मृति में मंदिर का निर्माण कराया था। ईश्वरा के प्रशस्ति शिलालेख को अयोध्या के वसुदेव भटट द्वारा लिखा गया तथा रोहतक के ईश्वर नाज द्वारा उत्कीर्ण किया गया था।

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

मन्दिर परिसर में स्थापित शिवलिगों की सुन्दरता देखते ही बनती है। गन्दिर के गर्भग्रह में तथा बाहरी दीवारों पर गंगा, यमुना, महिषासुर, मंदिनी, कुबेर आदि अनेक देवी-देवताओं की आकर्षक मूर्तियां हैं। सुदंर तोरण, अलंकरण में कार्तिकेय, गणेश, कुबेर की मूर्तियां हैं। अनेक मूर्तियां समय-समय पर उत्खन्न के दौरान प्राप्त हुई।

जिन पर मृदुकालिन शिल्पकाल की छाप दिखाई पड़ती है। यहाँ प्राचीन वस्तुओं का संग्रहालय है, जिसमें उत्खन्न के दौरान प्राप्त मूर्तियां, शिलापट आदि सामान रखा गया है। जो उस काल को अभिव्यक्ति देता है।

लाखागण्डल गन्दिर परिसर में अब तक निम्न प्रशरित शिलालेख प्राप्त हुये हैः- राजा छागलेश (अजेश्वर), गुप्तकालीन अभिलेख (शंखलिपि गे), गुप्तकालीन अभिलेख (ब्राहमीलिपि में) राजकुमारी ईश्वरा का प्रशस्ति लेख तथा नागरी लिपि में अभिलेख। ईश्वरा के प्रशस्ति लेख से पता बलता है कि यदुवंश के नरेश सैंहपुर अर्थात कालसी हरिपुर के क्षेत्र में राज्य करते थे। ईश्वरा के प्रशस्ति लेख में सैंहपुर के बारह नरेश जो बत्ताये गये हैं उनके नाग हैं रोनवर्मान, आर्यवर्गन, देववर्गन, प्रदीप्त वर्गन, ईश्वर वर्गन, बुद्धि वर्गन, सिंह वर्गन, जल वर्गन, यज्ञवर्गन, अचल वर्गन, दिवाकर वर्मन, और भास्कर वर्मन, जिनकी पुत्री थी ईश्वरा।

लाखामण्डल में प्राप्त उमा महेश्वर का मूर्तिपैनल, गणेश, कार्तिकेय शिवगणों की मूर्तियां मूर्ति कला का उत्कृष्ठ उदाहरण है। वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार कुछ मूर्तियां पांचवी शताब्दी की है। माना जाता है कि पूर्व धवस्त मन्दिरों का मुंह उत्तर की ओर रहा होगा। क्योंकि हजारों वर्षों से खडी जय विजय की मूर्तियों (द्वारपाल) का गुंह तथा गन्दिर का प्रवेश द्वार उत्तर की ओर होना चाहिये था। पर वर्तगान में जय विजय प्रतिमाओं का मुंह उत्तर की ओर तथा मन्दिर का प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है, ठीक एक दूसरे के विपरीत। दोनों मूर्तियां कभी एक हाथ में गदा उताये हुये थीं। दोनों के सिर पर खूबसूरत मुकुट, गले में हार, व कर्घनी में बंधे गुप्तांग के वस्त्र उत्कीर्ण हैं। चेहरे पर ओज, शौर्य, साहस टपकता दिखाई पड़ता है। मूर्तियां शिल्प तथा कला की दृष्टि से पांचवी शती की जानी जा सकती है। मुख्य गन्दिर के पास की पहाड़ी पर दूर से ही विशाल गुफाएँ दिखाई पड़ती है जिनमें पांडवों ने अज्ञातवाश के दौरान शरण ली थी तथा मुख्य मन्दिर के ठीक

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

500 मीटर नीचे है, उडयार गुफा। जिसका दूसरा सिरा प्राचीन चाकरी अर्थात आज के चकराता नामक स्थान पर खुलता था। इसी गुफा से पाण्डवों ने भाग कर अपनी जान बवायी थी।

लाखामंडल मंदिर वास्तुकला

लाखामंडल मंदिर जटिल डिजाइन और नक्काशी के साथ पारंपरिक भारतीय शैली में निर्मित एक सुंदर संरचना है। मंदिर कई बड़े और छोटे मंदिरों से बना है और इसमें एक बडा केंद्रीय हॉल है जो भगवान शिव और देवी पार्वती को समर्पित है। मंदिर में कई छोटे और बड़े प्रांगण, एक बड़ा तालाब और कई अन्य संरचनाएँ भी हैं। मंदिर की दीवारों को हिंदू देवी-देवताओं की सुंदर नक्काशी से सजाया गया है। मंदिर के प्रवेश द्वार को एक राजसी पत्थर के प्रवेश द्वार द्वारा चिह्नित किया गया है, और मुख्य मंदिर को गुंबद के आकार के शिखर से सजाया गया है।

2. अध्ययन की शोध प्रविधि

शोधकर्ता को अपने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिये किसी न किसी विधि को अपनाना पडता है। शोध रागस्या की प्रकृति के अनुसार ही शोध विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध समस्या में विवरणात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

3. वर्णनात्मक शोध प्रविधि

सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति का अत्यधिक महत्व है, जो कि इसे सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति के नाम से भी जाना जाता है। वर्णनात्मक अनुसंधान को परिभाषित करते हुए जान ब्ल्यू बेस्ट ने कहा है कि "वर्णनात्गक अनुसंधान क्या है का वर्णन एवं निर्वचन करता है। परिस्थितियां अथवा संबंध जो विद्यमान है, व्यवहार जो प्रवलित है, विश्वास विवारधारा अथवा अभिवृतियां पाई जा रही है, प्रक्रियाएं जो चल रही है,

परिणाम जो अनुभव किये जा रहे हैं उन्हीं से संबंधित है।" प्रस्तुत शोध में इसी वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग करते हुए शोध समस्या का उत्तर ढूढ़ने का समीचीन प्रयास किया गया।

तथ्य संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए मुख्य रुप से द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है। जिसमें तथ्य संकलन के लिए विभिन्न शोध पत्रों, डेस्क वर्क, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तक, लेख, के 15 भागों में विभक्त वांग्गय पुस्तक आदि के माध्यगों से तथ्यों का संकलन किया गया है।

4. अपेक्षित परिणाम

महाकाव्य पांडवों की सज्जनता को दर्शाता है। पांडव राजकुमार युधिष्ठिर अपने शिक्षकों के पारा गए जो कौरवों की तरफ से लड़ने के लिए बाध्य थे। वह कहता है, "हे अजेय, मैं आपको नमन करता हूं। हम आपसे लड़ेंगे। कृपया हमें अपनी अनुमति दें और हमें अपना आशीर्वाद दें। सम्मान के इस संकेत के लिए दोनों पुरुषों ने पांडवों की जीत के लिए प्राथना की इस महाकाव्य से पता चलता है कि प्राचीन काल में देवताओं ने अपनी शक्तियों का उपयोग दुष्ट पुरुषों या ताकतों को नष्ट करने के लिए किया था। युद्ध का प्रमुख अस्त्र तीर था। युद्ध की कहानी में आकाशीय अस्त्रों का प्रयोग होता था। प्राचीन काल में देवताओं के लिए बलिदान बहुत आम था जैसे किसी पुरुष या महिला को आग में फेंकना आदि। जादुई मंत्र बहुत

Vol. 13, Issue 08, August: 2025
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

आम थे, खासकर युद्ध के दौरान। बदला महाकाव्य का मुख्य विषय है। इससे पता चलता है कि युद्ध के दौरान कुछ बहुत ही क्रूर कार्य भी किए गए थे जैसे कि जब भीग ने अपनी गदा रो दुशारान को जगीन पर पटक दिया और चीर-फाड कर उसका सीना खोल दिया। उसने उसका खून पिया और कहा कि यह उसकी माँ के दूध से बेहतर है। महाकाव्य के अंत में यह पता चलता है कि युद्ध समाप्त हो गया लेकिन पांचों पांडवों को छोड़कर युद्ध में दोनों पक्षों के सभी लोग मारे गए। युद्ध एक नैतिकता के साथ हुआ कि युद्ध एक बुरी चीज है।

प्राचीन भारत में गहाभारत से पता चलता है कि राज्य अत्यधिक गूल्यवान है। राजा ब्राह्माणों का आदर करते हैं। नारी का सम्मान होता था। गाय को स्वर्ग की ओर ले जाने वाली सीढी के रूप में माना जाता है।

इरा प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गहाभारत को प्राचीन भारतीय इतिहारा को रागाने के लिए एक स्रोत के रूप में इरतेगाल किया जा सकता है। हालांकि यह धार्मिक साहित्य का हिस्सा है लेकिन प्राचीन भारत के लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

5. संदर्भ ग्रन्थ सूची

- *फुरे, कोनल और साल्वोरिस, माइकल जे., (2010) द मेथड्स एंड स्किल्स ऑफ हिस्ट्रीः ए प्रैक्टिकल गाइड। तीसरा संस्करण। व्हीलिंग, आईएलः हार्लन डेविडसन, इंक., पी:223।*
- *बद्रीनाथ, चतुर्वेदी। द महाभारतः एन इंक्वायरी इन द ह्यूमन कंडीशन, नई दिल्ली, ओरिएंट लॉन्गमैन (2006)*
- *बंद्योपाध्याय, जयंतानुजा (2008)। प्राचीन भारत में वर्ग और धर्म। गान प्रेस।*
- *बाशग, ए.एल. (1954)। द वंडर दैट वाज इंडियाः गुसलगानों के आने से पहले भारतीय उपगहाद्वीप की संस्कृति का एक सर्वेक्षण। न्यूयॉर्कः ग्रोव प्रेरा।*
- *भसीन, आर.वी. "महाभारत" राष्ट्रीय प्रकाशन, भारत, 2007 द्वारा प्रकाशित ।*
- *जे ब्रॉकिंगटन। द संस्कृत एपिक्स, लीडेन (1998)।*
- *ब्यूटेनेन, जोहान्स एड्रियनस बर्नार्डस (1978)। महाभारत। 3 खंड (अनुवाद /प्रकाशन उनकी मृत्यु के कारण अधूरा)। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।*
- *चैतन्य, कृष्णा (के.के. नायर)। गहाभारत, एक साहित्यिक अध्ययन, क्लेरियन बुक्रा, नई दिल्ली 1985।*
- *9. गुप्ता, एस.पी. और रागचंद्रन, के.एस. (ईडी।)। महाभारतः गिथक और वास्तविकता । आगम प्रकाशन, नई दिल्ली 1976।*
- *हिल्टेबेइटेल, अल्फ। द रिचुअल ऑफ बैटल, कृष्णा इन द गहाभारत, रानी प्रेरा, न्यूयॉर्क 1990।*
- *हॉपकिंस, ई.डब्ल्यू द ग्रेट एपिक ऑफ इंडिया, न्यूयॉर्क (1901)।*
- *ज्योतिर्मयानंद, स्वामी। महाभारत का रहस्यवाद, योग रिसर्च फाउंडेशन, मियामी 1993 1*
- *काट्ज, रूथ सेसिली अर्जुन इन द महाभारत, यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कैरोलिना प्रेस, कोलंबिया 1989।*
- *के, जॉन (2000)। भारतः एक इतिहास। ग्रोव प्रेस। आईएसबीएन 0-8021-3797-01*
- *मजूमदार, आर.सी. (सामान्य संपादक) (1951)। भारतीय लोगों का इतिहारा और संस्कृतिः (खंड 1) वैदिक युग। लंदनः जॉर्ज एलन और अनविन लिमिटेड।*
- *लर्नर, पौले। एस्ट्रोलॉजिकल की इन महाभारत, डेविड व्हाइट (ट्रांरा.) गोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली 1988.*
- *मैलोरी, जे.पी. (2005)। इंडो-यूरोपियन की खोज में। थेम्स और हडसन । आईएसबीएन 0 500 27616 1*
- *गेहता, एग। गहाभारत के दोहरे परिचय की रागरया, जेएओएस 93 (19/3). 547-550।*
- *गिन्कोवरकी, सी.जेड. जनगेहरा रात्र और अनुष्ठान संरचना, जेएओएरा 109 (1989), 410-4201*
- *मिन्कोवस्की, सी.जेड. 'सांप, सत्र और महाभारत' मेंः महाभारत पर निबंध, संस्करण। ए. शर्मा, लीडेन (1991), 384400 ।*
- *ओल्डेनबर्ग, हरगन। जुर गेशिचते डेर अल्टिडिरचेन प्रोशा, बर्लिन (1917)*